28.09.2016 को हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह के अवसर पर राजभाषा प्रभारी का संबोधन

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, सदस्यगण, सचिव, वरिष्ठ अधिकारियों एवं नौजवान साथियों जैसा कि आपको ज्ञात ही है कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी के.वि.प्रा. कार्यालय में दिनांक 14 से 28 सितंबर तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। समारोह के समापन के अवसर पर राजभाषा प्रभाग की ओर से आप सभी का सादर अभिनंदन है । हिंदी के बारे में आपके समक्ष कुछ विचार प्रस्तुत हैं ।

यह मेरा पहला सौभाग्य है कि मैं उस पीढ़ी से हूं जिसने कि स्वतंत्र भारत में जन्म लिया । दूसरा सौभाग्य यह है कि मेरे पूज्य गुरुजनों ने मुझे हिंदी का ज्ञान भी दिया । अत: हिंदी के बारे में किसी भी आयोजन में शामिल होना और अपना सहयोग देना मेरे लिए व्यक्तिगत रुप से एक अति शुभ कार्य की श्रेणी में आता है । हम सभी को "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" का भी पूर्ण अहसास है, हिंदी भाषा प्रत्येक भारतीय के तन-मन में रची-बसी है तथा इसी आलोक में हिंदी राष्ट्रीयता का पर्याय भी है । अत: हिंदी भाषा भारतीयता एवं स्वतंत्रता को अक्षुण बनाए रखने का पर्याय बन गयी है ।

संयोग से आज 28 सितम्बर का दिन भारत के एक महान स्वतंत्रता संग्राम के नायक शहीद भगतसिंह जी का जन्म दिन भी है । अत: हिंदी पखवाड़े के समापन के अवसर पर हम महान स्वतंत्रता सेनानियों का स्मरण व नमन भी करें । स्वराज के पक्षधर महान स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने प्राणों की आहूति भी दे दी थीं । उन्होंने स्वतंत्र भारत के साथ-साथ एक अखण्ड भारत की कल्पना भी की थी । मेरे विचार से "एक भाषा" अर्थात "राजभाषा" उस कल्पना को साकार करने का सबसे बड़ा माध्यम है । बहुत से महान व्यक्तियों ने इस कथन को बार-बार दोहराया है कि "हिंदी भारत की एकता की कड़ी है" । हिंदी की महानता को हमारे शिक्षाविदों, नेताओं एवं संविधान निर्माताओं ने महसूस किया था और राजभाषा के रूप में हिंदी को अंगीकार किया था ।

इस बारे में एक छोटी सी बात आपके सामने रखना चाहूंगा वह यह है कि पठन और पाठन से भाषा के सीखने और उसके प्रयोग करने में काफी सहायता मिलती है । आप सभी से अनुरोध है कि प्राधिकरण के पुस्तकालय में वर्तमान में उपलब्ध हिंदी की पुस्तकों का अधिक-से-अधिक उपयोग करें और नई पुस्तकों के मंगाने के बारे में पुस्तकालय को सुझाव दें ।

आपके उत्साह को देखते हुए और आपमें भरोसा जताते हुए मैं एक वचन मांगना चाहता हूं कि जिस पौधे को हमने 14 सितम्बर को हिंदी पखवाड़ा शुभारम्भ के रूप में रोपित किया था उसको तब तक पल्लवित व पोषित करते रहेंगे जब तक कि ये एक

वृक्ष बनकर अपने फूलों से मधुर महक न देने लगे और इस पर आपके परिश्रम के फलस्वरूप मधुर फल न लगने लगें । इस विश्वास के साथ मैं आशा करता हूं कि आप एक नये जोश से राजभाषा के प्रचार-प्रसार में आज ही से जी-जान से जुट जायेंगे और अगली बार जब किसी भी हिंदी समारोह में मिलेंगे तो हिंदी में कार्य करने में आपको जो गर्व की अनुभूति हुई उसका उल्लेख करना नहीं भूलेंगे । हिंदी की उन्नति में आप सबकी एवं राष्ट्र की उन्नति का भाव है, ऐसी मेरी प्रार्थना भी है और यह अपील है कि हम हिंदी के प्रचार एवं प्रसार को पावन कर्त्तव्य मानेगें । आपकी तालियों की गड़गड़ाहट इस बात का स्पष्ट संकेत है कि आपने मेरे द्वारा प्रस्तावित वचन को सहर्ष स्वीकार कर लिया है ।

आप सभी की उन्नति की कामना के साथ अब समापन समारोह के विभिन्न रंग आपके समक्ष प्रस्तुत है ।

जय हिंद, जय हिंदी, जय हिन्दी वाले !